॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जनवरी, 2017 वर्ष 20, अंक 1
विक्रमी सम्वत् 2073
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

ईश्वर से क्या मांगे

❐ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

मेरे घर से बाजार के रास्ते में एक मंदिर पड़ता है। अक्सर बाजार जाते समय मैं वहां कौतुक होते देखता हूं। मंदिर का पुजारी भी कुछ विचित्र किस्म का लगता है पर मुझ से खुलकर बात करके हंस लेता है। एक दिन बाजार जाते हुए मैं मंदिर के बाहर रूक गया। अभी आरती का समय नहीं हुआ था सो पंडित जी बाहर ही खड़े थे। तभी दो लड़कियां स्कूटी पर वहां से निकली और हाथ हिला कर जोर से 'हाय हनु' कहकर चली गई। मैं चौंका तो पंडित जी हंस पड़े बोले ''महाशय जी इनके पास समय कहां है यह पूरी शाम बाजार में दोस्तों के साथ फलर्ट करके चाउमिन पिज्जा खायेंगी, अब यही फलर्ट भगवान के साथ भी करने लगी हैं।'' पंडित जी की बात सुनकर मेरी रूचि और बढ़ गई। मैंने पूछा ''पर पंडित जी यह ऐसा करके आपके इस भगवान से मांगते क्या हैं ?'' पंडित जी बोले ''मत पूछिये जनाब इनकी कैसी अनोखी मांग होती है! कोचिंग के बहाने दोस्तों के साथ मटरगश्ती और पेपरों के दिनों में हे भगवान पास करवा देना व्रत रखूंगी। लड़के आयेंगे हे भगवान फलां लड़की पट जाये मैं प्रसाद चढ़ाउंगा। नौकरी लग जाए तो दान दूंगा। एक भक्त आया और बोला पंडित जी प्रार्थना कर दो लाटरी लग जाए तो सवा मनी कर दूंगा। अगर फ्लैट मिल गया तो माता पर जाकर आउंगा। एक तो पड़ोसी के नुकसान की मन्नत मांग कर गया। बस महाशय जी आजकल तो लोग भगवान से यही कुछ मांगते हैं।'' पंडित जी की बात सुनकर मैं बरबस जोर से हंस पड़ा ''पंडित जी लोग यहां ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करते हैं या व्यापार?'' पंडित मेरा आशय समझकर कुछ संजीदा हो गया ''महाशय जी यह तो मुझे नहीं पता लेकिन इनके चढ़ावे से मेरा गुजारा अच्छा चल जाता है।'' मैंने हंसते हुए कहा ''ठीक है पंडित जी भगवान के नाम पर आपका व्यापार अच्छा चल जाता है।'' इतना कहकर मैं बाजार की ओर चल दिया और सोचने लगा कैसा अंधविश्वास है आजकल लोग भगवान से उपासना प्रार्थना के नाम पर सीधा सीधा व्यापार करने लगे हैं।

यही सोचते चिंतन करते बाजार पहुंचा तो एक और कौतुक दिखाई दिया। किरयाने की दुकान पर एक आदमी कपड़ा देने की जिद कर रहा था और दुकानदार उस पर झल्ला रहा था। मैंने अपना सामान लेने से पहले दुकानदार से माजरा पूछा तो वह बोला ''महाशय जी, यह पागल है मेरी दुकान से कपड़ा मांगेगा, कपड़े की दुकान पर दाल-चावल पूछेगा''। दुकानदार की बात सुनकर मैं चिंतन में पड़ गया, अपना सामान लिया और सोचते हुए वापिस चल दिया।

मैं सोच रहा था क्या हम सबकी यही स्थिति तो नहीं है। पहले तो हम ईश्वर का सच्चा स्वरूप नहीं समझते और भगवान के ठेकेदार बनकर बैठे गुरूओं, डेरे, मंदिरों के पुजारियों, पीरों के पास अपनी ऐसी लंबी चौड़ी मांग सूची लेकर पहुंच जाते हैं और फिर वहां ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए व्यापार करते हैं।

अब प्रश्न पैदा होता है कि हम ईश्वर से क्या मांगे? हमें ईश्वर क्या दे सकता है? लोग अक्सर कहते हैं ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है वह प्रसन्न हो जाए तो कुछ भी और सब कुछ दे सकता है। जैसे ईश्वर ना हुआ सवामनी के वादे में हमने अपने काम के लिए ठेकेदार चुन लिया। क्या ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने का यही अभिप्राय है। आर्य सिद्धांतों के अनुसार चूंकि सर्वव्यापी ईश्वर को अपने कार्यो अर्थात सृष्टि के निर्माण, पालन, न्याय और संहार में किसी अन्य की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिए वह सर्वशक्तिमान कहलाते हैं। अब यदि ऐसे ईश्वर से हम अपने लिए भौतिक सुख सुविधायें, नौकरी, धन, लाभ या शत्रु का विनाश मांगते हैं और स्वयं उसके लिए कोई पुरुषार्थ ना करके ईश्वर के किसी ठेकेदार से दान, दक्षिणा आदि का सौदा करने का प्रयास करते हैं तो हमारी स्थिति भी उसी अबोध पागल सरीखी है जो कि किरयाने की दुकान पर कपड़ा मांग रहा था।

हम ईश्वर से क्या प्रार्थना करें इसके लिए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सातवें सम्मुलास में स्पष्ट करके लिखते हैं - **यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मा मद्य मेधायाग्ने मेधाविनं कुरुः स्वाहा॥** यजु. 32/14 अर्थात हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर आपकी कृपा से जिस बुद्धि की उपासना विद्वान, ज्ञानी और योगी लोग करते हैं उसी बुद्धि से युक्त हम को इसी वर्तमान

(शेष पृष्ठ 17 पर)

1 जनवरी भारतीय वैदिक नववर्ष नहीं हैं।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शिक्षा, संस्कृति और वैदिक संस्कारों के संवाहक

देखा ना कोई ऐसा डॉ. श्री पूनम सूरी जैसा

दयानन्द एंग्लो वैदिक (डी.ए.वी.) संस्थाविगत एक शताब्दी के पूर्व से ही भारतवर्ष में प्राचीन अर्वाचीन शिक्षा, भारतीय संस्कृति और वैदिक संस्कारों के प्रचार-प्रसार में सतत समर्पित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह पावन भावना थी कि हमारा देश शिक्षा, संस्कृति और वैदिक संस्कारों के द्वारा पुनरूत्थान, आत्मगौरव और विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है। अपने गुरु के स्वप्न एवं सन्देश को साकार करने के लिए ऋृषिभक्तों में अग्रण्य महात्यागी, महामानव, महात्मा हंसराज ने डी.ए.वी. संस्था के द्वारा वर्तमान शिक्षा पद्धति के साथ-साथ प्राचीन वैदिक ज्ञान-विज्ञान, संस्कार और यज्ञ को अपनाकर एक नये युग का सूपात किया।

दूसरी ओर ऋषि दयानन्द के परम भक्त वीतरागसन्त, सहृदय व रोचक वक्ता, कुशल-लेखक पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपनी माधुर्य एवं मनोहारिणी वाणी एवं कलात्मक, सरस लेखनी से वैदिक मन्तव्यों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

एक ओर गंगा के पावन तट पर सर्वस्वत्यागी, महा-मनीषी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके वैदिक शिक्षा वैदिक धर्म की पताका फहराई। त्याग, समर्पण, संकल्प और आत्म बलिदान करने वाले ऐसे ऋषिभक्तों की महान परम्परा का बलिदानी इतिहासी है।

जहां डी.ए.वी. में पढ़नेवाले हजारों युवक वैदिक विचारधारा से अनुप्राणित और संस्कारित होकर देश के नवनिर्माण में सहभागी बने। जिनमें सुप्रसिद्ध न्यायधीश, अधिवक्ता, अभियन्ता, चिकित्सक, प्राध्यापक, कलाकार, संगीतकार और देशभक्ति की उदान्त भावना विद्यमान थी।

मुझे कितने धार्मिक सज्जन मिले हैं। जो डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर तथा अन्य महाविद्यालयों से पढ़कर निकले। देश में उच्चपदों पर रहकर अपने कार्यो व व्यवहार से डी.ए.वी. और आर्यसमाज का गौरव बढ़ाया। यह तो हमारे पूर्वजों की पुण्यगाथा है। जो हमारे जीवन में वैदिक धर्म के अभ्युत्थान व देश सेवा के कार्यो को करने में सदा उत्साह का संचार करती है। इस वर्तमान समय में डी.ए.वी. के गौरवशाली इतिहास व प्रगति पथ का सम्पूर्ण नेतृत्व करने वाले, शिक्षा, संस्कृत और वैदिक संस्कारों के संवाहक सभा के प्रतिष्ठित प्रधान श्री पूनम सूरी आर्यरत्न का पालन-पोषण तथा संवर्धन हुआ।

यह श्री सूरी जी का परम सौभाग्य है कि उनको पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज के पावन संस्कार विरासत में मिले। आपका स्वभाव सहज, सरल, हंसमुख, आकर्षक और संप्रेरक है। आप अपनी ओजस्वी और प्रभावी वक्तृत्वकला से दूसरों को समोहित कर लेते हैं। आप महान शिक्षाशास्त्री, बुद्धिजीवी और दूरद्रष्टा हैं। आपके सफल और प्रेरक नेतृत्व में डी.ए.वी. संस्था प्रगति-पथ पर अग्रसर हो रही हैं शिक्षा और संस्कारों की नवीन क्रान्ति का सूत्रपात आपने किया हैं।

डी.ए.वी. विश्व विद्यालय की स्थापना से लेकर महाविद्यालयों, विद्यालयों तथा डी.ए.वी. मुख्यालय में वैदिक संस्कारों के समायोजन हेतु भव्य यज्ञशाला का निर्माणकर स्वयं यज्ञ करना और दूसरों को सबल प्रेरणा देने का काम किया है। बृहत् सम्मेलनों का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करना और पूज्य सन्यासीगण, विद्धज्जन, उपदेशकवर्ग और धर्माचार्यो का पूर्ण सम्मान करना आपके विशाल हृदय का एक परिचय है।

हमारा पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में डी.ए.वी. की सभी संस्थाओं में वैदिक धर्म, संस्कृत, भारतीय संस्कृति और शिक्षा का शंखनाद सदा गूँजता रहेगा। महापुरुषों के पुण्यकर्मो की यह पुष्पवाटिका डॉ. पूनम सूरी जी के करकमलों से सिञ्चित होकर पल्लवित और पुष्पि होती रहेगी।

– आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, मो. 9871020844

‘टंकारा के पूत तुने कर दिया कमाल’

महर्षि दयानन्द के उपकार

- चाहते तो किसी भी बड़े मन्दिर के मठाधीश बनकर अन्य पंडितो की तरह आराम से बैठे-बैठे खाते पीते मौज उड़ाते लेकिन ऐसा न करके अपना पूरा जीवन समाज और सनातन धर्म के लिए दान कर दिया। एकलव्य ने सिर्फ अंगूठा दिया था गुरुदक्षिणा में लेकिन दयानन्द ने तो पूरा जीवन दे दिया गुरु दक्षिणा में ।
- जिन वेदों को सनातन धर्म की रीढ़ समझा जाता था। उनका लोप हो चुका था लोग वेद शब्द तक भूल गये थे लेकिन दयानन्द ने फिर से वेदों को मानो तक नया जीवन दे दिया था। लोग वेदों को पुनः जानने लगे उन्हें मानने लगे।
- सनातन धर्म में भिन्न-भिन्न प्रकार के आडम्बर, पाखंड फैल चुके थे यज्ञ के नाम पर बलि चढ़ाई जाती थी दयानन्द ने उन सब पाखंडो का विरोध करके उनके खिलाफ अभियान चलाया ताकि समाज और राष्ट्र इस अन्धकार से निकल कर प्रकाश की तरफ जा सकें।
- दयानन्द के समय में स्त्री और शुद्र शिक्षा का विरोध किया जाता था लेकिन दयानन्द ने स्त्री और शूद्रों की शिक्षा का समर्थन करके उन्हें शिक्षित करके समाज में सम्मान दिलाया।
- भारत भूमि से जिस वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा का खात्मा हो चुका था उसका पुनर्रूत्थान किया।
- इस देश में कोई हिन्दू-मुसलमान और इसाई बन सकता था लेकिन कोई मुसलमान और ईसाई हिन्दू नहीं बन सकता था। उन्हें हिन्दू धर्म में नहीं आने दिया जाता था उन्हें अछूत और भ्रष्ट कह कर समाज में नकार दिया जाता था लेकिन दयानन्द ने ये बंद रास्ते खोले और शुद्धिकरण की प्रक्रिया चला कर इसाई और मुसलमान बने हुओं को वापिस हिन्दू बनाया।
- उस काल में भारी स्तर पर गौ हत्या होती थी कत्लखाने चलते थे, लाचार और बेसहारा गायों को कत्ल खानों में छोड़ दिया जाता था। इससे द्रवित होकर दयानन्द ने रेवाड़ी में पहली गौशाला खोली। ताकि गौमाता का सरक्षण हो और भारत से गौ हत्या बंद करवाने के लिए लाखो लोगों के हस्ताक्षर करवा कर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को पत्र लिखा।
- उस समय स्थिति यह थी कि हिन्दुओं के जो बच्चे अनाथ हो जाते थे उन्हें कोई सहारा देने वाला नहीं था इसलिए मुसलमान और ईसाई उन्हें बहला फुसला कर ईसाई और मुसलमान बना लेते थे। जब दयानन्द को इस बात का पता तो उन्होंने अजमेर के अंदर पहला अनाथालय खोला।
- विधुर तो दूसरी शादी कर सकते थे लेकिन विधवाओं को दूसरे विवाह की आज्ञा नहीं थी लेकिन दयानन्द ने विधवा पुनर्विवाह का आन्दोलन चला कर लाखों विधवाओं की मांग में फिर से सिंदूर भरवा दिया।
- भारत उस समय अंग्रेजी शासन की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था उस वक्त दयानन्द ने सबसे पहले स्वराज्य का नारा दिया और 1857 की क्रांति की नींव रखी। लाखों भारतीयों को स्वतन्त्रता संग्राम के प्रेरित किया।
- उस समय भारत भिन्न-भिन्न भाषाओं में बंटा पड़ा था। जिसके कारण एक कौने से दूसरे कौने में बात रखने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण रोड़ा थी। तब दयानन्द ने भाषा की एकता को मुद्दा बनाया और भाषा की एकता का प्रचार किया और हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयास किया उनका मानना था कि भाषा की एकता के बिना राष्ट्र का उत्थान कदापि नहीं हो सकता। इसीलिए उन्होंने हिन्दी का विशेष ज्ञान ना होते हुए भी अपने सबसे मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना भी हिन्दी में की ताकि आमजन तक यह पहुँच सके। ऐसे अनेकों कार्य दयानन्द ने समाज के लिए किये और उस समाज के लिए किये जिसने उसे 17 बार जहर देकर मारने की कोशिश की।

आओ चलें ऋृषि जन्म भूमि टंकारा

ऐसे उपकारी ऋषि की जन्म भूमि पर हम सब आर्यो को अपने जीवन काल में एक बार अवश्य आना चाहिए। हम सब आर्यो को उस ऋषि के उपकारों की जानकारी है लेकिन समय के सायं भूल जाते है।

विशेष कर नारी शिक्षा/जागरण, बाल विवाह, विधवा विवाह, वेद पड़ने का अधिकार सबका जैसे कई उपकार हैं। जिसका हम ऋण हम उतार नहीं सकते। ऐसे ऋषि के घर एक बार तो पधारें। प्रति वर्ष बोधोत्सव के अवसर पर विशाल ऋषि मेला टंकारा जन्म भूमि पर आयोजन किया जाता है। जहां देश-विदेश के असंख्य ऋषि भक्त उस पुण्य जन्मभूमि पर पधारते हैं और उस ऋषि को स्मरण कर प्रेरणाएं लेकर वहां से वापस अपने कार्य क्षेत्र में चले जाते हैं।

मेरा उन सभी ऋषि भक्तों से साविनम्र आग्रह/निमन्त्रण है कि जो ऋषि भक्त अभी तक जन्मभूमि टंकारा नहीं पधारे वह आगामी 23, 24, 25 फरवरी 2017 को होने वाले ऋषि मेला (बोधोत्सव) में अवश्य पधारे। प्रतिदिन होने वाले सम्मेलनों में सम्मितलित हो, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करें। **(यहां आने वाले ऋषि भक्त कहते रहे हैं कि यहां आत्मा की भूख को मिटाने वाला प्रसाद प्राप्त होता है।)** भारत के उच्च कोटि के संन्यासी/विद्वान/भजनोपदेशक इस उत्सव पर पधार रहें है। उनकी वाणी से निकले ज्ञान वर्धक प्रवचनों का लाभ उठा इस भूमि से प्रेरणा प्राप्त करें। **कार्यक्रम की विस्तृत इसी अंक में अन्य पृष्ठ पर पढ़े।**

अजय टंकारावाला

जीवन में संस्कारों का महत्व

❐ विश्वेन्द्रार्यः

'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से संस्कार शब्द बनता है। मानव जीवन को उच्च दिव्य एवं महान बनाने के लिए वैदिक संस्कारों का विशेष महत्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त 16 संस्कारों को करने का विधान हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदाज्ञा के अनुसार किया है।

'संस्क्रियते अलंक्रियते अनेन इति संस्कार' अर्थात् जिससे शरीर, मन एवं आत्मा अलंकृत, सुशोभित या परिष्कृत होते हैं, उत्तम और श्रेष्ठ होते हैं उसे संस्कार कहते हैं।

आज संस्कारों के अभाव में ही मानव पशु से भी निम्नतर स्तर को प्राप्त चला जा रहा है। उसने अपने मानवता रूपी धर्म का परित्याग कर दिया है। स्वधर्म को त्याग करके अर्थ को प्राप्त करने में अपना सब कुछ न्यौछावर कर रहा है। उसकी धन के प्रति अतृप्त लालसा भाई को भाई, पिता को पिता, बहिन को बहिन नहीं समझ रही है, परिवार टूट रहे हैं।

आज एक दूसरे के लिए स्वप्राणों को न्योछावर करने वाले राम, लक्ष्मण, भरत जैसे भाई, श्रवणकुमार के समान मातृ-पितृ भक्त, भीष्म के समान दृढ़ प्रतिज्ञ, हरिश्चन्द्र जैसे सत्यनिष्ठ, दयानन्द जैसे त्यागी, तपस्वी, समाज सुधारक एवं अखण्ड ब्रह्मचारी दूर-दूर तक दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं।

मानव को सुखी बनाने के लिए अनेक प्रकार के भौतिक साधनों को उपलब्ध कराया जा रहा है, क्योंकि आज के मानव की दृष्टि केवल भौतिक उन्नति तक ही सीमित रह गई हैं। हम भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण समझ बैठे मानव का सबसे बड़ा प्रश्न रोटी का प्रश्न है। यदि रोटी का प्रश्न हल हो जाये तो सभी समस्याओं को समाधान हो जाये। लेकिन भोजन, आजीविका एवं भौतिक साधन प्राप्त कर लेने पर भी संस्कारों के अभाव में व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता ये शाश्वत सत्य है। संस्कारवान व्यक्ति भौतिक साधनों के अभाव में भी स्वयं को सुखी अनुभव करता है, क्योंकि संस्कारों के द्वारा ही 'शरीर, मन एवं आत्मा उन्नत बनते हैं।'

किसी वस्तु के पुराने स्वरूप को बदलकर उसे नवीन स्वरूप संस्कारों के द्वारा ही प्रदान किया जाता है। महर्षि चरक लिखते हैं ''संस्कारों हि गुणान्तराधानमुच्यते'' अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों एवं दोषो को को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों के आधार करने को संस्कार कहते हैं। जिससे कि उसका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम बने तथा मन में पवित्र भावना हो और सत्कर्मो को करके शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति करता हुआ शरीर, मन और आत्मा को सद्गुणों से अलंकृत करे।

जब बालक का जन्म होता है तब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर के आता है। एक तो वे संस्कार हैं जिसे वह जन्म जन्मान्तरों से अपने साथ लाला है और दूसरे वे हैं जिनको अपने माता-पिता से संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से प्राप्त करता है ये अच्छी भी हो सकते हैं और बुरे भी हो सकते हैं।

वैदिक संस्कार मानव निर्माण की एक उत्तम योजना है। इस योजना में बालक को इस प्रकार के वातावरण से घेर दिया जाता है जिससे केवल अच्छे संस्कारों के पनपने का ही अवसर मिलता है। बुरे संस्कार चाहे पिछले हों या इस जन्म के हों अथवा माता-पिता या मित्रों से प्राप्त हों, उन्हें निर्बीज कर दिया जाता है।

जिस प्रकार सोना, चाँदी, लोहा आदि धातुओं को अग्नि में डाल देने से उनकी अशुद्धता नष्ट होकर शुद्ध एवं निर्मल हो जाते हैं ठीक इसी प्रकार से वैदिक संस्कारों के माध्यम से बालक, बालिका के विगत जन्मों के अशुभ कर्मो के वासना रूपी दोषों को दूर कर दिया जाता है और उन्हें सद्गुणों से युक्त कर दिया जाता है जिससे कि वह मानव जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सके।

जीवात्मा जन्म-जन्मान्तरों में अनेक प्रक्रियाओं से गुजरता है। प्रत्येक जन्म में इस पर अच्छे या बुरे संस्कार पड़ते हैं। वैदिक संस्कृति में आत्मा के पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों के प्रभाव द्वारा समाप्त किया जाता है। जिस समय एवं जिस क्षण भी जीवात्मा मानव शरीर के बन्धन में बँधता है उसी समय से और उसी क्षण से वैदिक संस्कृति उस पर उत्तम संस्कार डालना आरम्भ कर देती है और जीवात्मा जब तक उसे मानव शरीर में विद्यमान रहता है तब तक उस पर श्रेष्ठ निरन्तर डाले जाते हैं क्योंकि जिन संस्कारों का प्रभाव उस जीवात्मा पर अधिक होगा वह उसी प्रकार का आगे आचरण करेगा। उसके पूर्व जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार यदि अशुभ हैं तो उनको शुभ संस्कारों के अत्यधिक प्रभाव से दबा दिया जाता है।

उदाहरण के लिए दूब घास के तिनकों में अपनी गंध है लेकिन केसर की गंध की अपेक्षा से कम है। यदि दोनों को एक साथ रख दिया जाता है दूब घास की स्वयं की गंध कम होने के कारण केसर की गंध को ग्रहण कर लेती है और टूब से भी केसर की गंध आने लगती है। इसी प्रकार केसर की गंध कम है प्याज की गंध की अपेक्षा से, यदि कुछ समय केसर और प्याज को एक साथ रख दिया जाता है तो केसर की गंध दब जाती है और उसमें से भी प्याज की गंध आने लगती है। तो पता चला कि जिसका जितना अधिक प्रभाव है वह कम प्रभाव वालों पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ होता है। इसी प्रकार से पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों को भी वैदिक संस्कारों की अधिकता के कारण उन्हें निर्बीज कर दिया जाता है। अतः श्रेष्ठ संस्कारों का प्रभाव मानव के जीवन पर्यन्त उसकी आत्मा पर विद्यमान रहता है।

जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं लेकिन (संस्काराद् द्विज उच्यते) संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य कहलाने का अधिकारी बनता है।

महर्षि प्रवर देव दयानन्द लिखते हैं, 'जिसे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं और संतान अत्यन्त योग्य होते हैं। इसलिए संस्कारों का करना उचित है। (संवि. भूमिका)

अतः स्पष्ट है कि संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवपं आत्मा उत्तम बनते हैं और जब शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बन जायेंगे तो संतानों को भी अत्यन्त योग्य बनाया जा सकता है और जीवन के सर्वोपरि लक्ष्य मोक्ष सुख को भी प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सम्पूर्ण मानव जाति का परम कर्तव्य है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त स्वयं को उत्तम संस्कारों से घेरे रखें। क्योंकि संस्कारों से ही जीवन उच्च, दिव्य एवं महान बनता है।

- धर्माचार्य आर्यसमाज, एफ-65, कमला नगर, आगरा-4,

वैदिक धर्म ही वास्तविक मानव धर्म है

❒ श्री श्यामसिंह आर्य 'वेदनिपुण'

मानवता ही मानव का मूल धर्म है। धर्म क्या है? 'धार्यते इति धर्मः' अर्थात् जिन गुणों को मानव धारण करे, ठीक उसी तरह जिस तरह से 'अग्नि' ने अपने 'अग्नित्व' के गुण को धारण कर रखा है। यह 'अग्नित्व' का गुण ही 'अग्नि' का धर्म है। यदि अग्नि से इसके इस गुण को अलग कर दिया जाए तो वह अग्नि न रहकर राख मात्र रह जायेगी। इसी तरह मानव को भी अपने मानवता के गुण-दया, अहिंसा, सदाचार, परोपकार आदि को हमेशा धारण करना चाहिए। मानव को असत्य, छल कपट जैसे पाप कर्मो से दूर रहते हुए निश्छल हृदय से उस परमपिता परमात्मा का स्मरण करना चाहिए।

मानव को जन्म से ही बुद्धि, चेतना तथा देखने-सुनने एवं मनन करने की शक्ति मिली है। 'मत्वा कर्माणि सीव्यति' अर्थात् जो सोच-विचारकर कर्म करे, मानव कहलाता है। पशु और मानव में यही अन्तर है कि पशु को अच्छे-बुरे कर्म का विवेक नहीं होता। जंगल में शेर जानवरों का शिकार करता है क्योंकि वह 'अहिंसा परमो धर्मः' को नहीं जानता। घर के अन्दर बिल्ली नन्हें-मुन्ने राजा-बेटे के रखे दूध को चुपके-चुपके पी जाती है क्योंकि उसे 'अस्तेय परमव्रत' (चोरी न करने) का विवेक नहीं। देखा जाए तो मानव का कर्त्तव्यपालन ही उसका धर्म है। मानव के मुख्यतः चार कर्त्तव्य होते हैं-पहला स्वयं के प्रति, दूसरा अपने परिवार के प्रति, तीसरा समाज व देश के प्रति तथा चौथा धर्म के प्रति। इनमें से यदि वह किसी भी एक का ठीक ढंग से कर्त्तव्यपालन नहीं करता तो वह उसकी वैदिक मानवधर्म के प्रति अवज्ञा है। मनु की संतान मननशील होने के कारण ही मानव है। मनु महाराज ने मानव को जो दस धर्म के लक्षण बताये हैं, वे सभी के लिए हैं-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

अर्थात् धृति=धैर्य रखना, क्षमा=निंदा, स्तुति, मान-अपमान, लाभ-हानि आदि में सहनशील रहना। दम=मन को अधर्म से रोककर धर्म में प्रवृत्त करना। धरतेय-मोदी न करना, शौच=राग-द्रेषादि को छोड़कर अन्तर की शुद्धि तथा जलादि से बाह्य शरीर की शुद्धि करना। इन्द्रियानिपद्र=अधर्म के आचरण से इन्द्रियों को रोकर धर्म में ही चलाना। थ्री=बुद्धिनाशक पदार्थ तथा दाणे का संग, आलस्य-प्रमाद आदि को छोड़कर श्रेष्ठ पदार्थो का सेवन, सत्पुरुषों का साथ, योगाभ्यास आदि से बुद्धि से बुद्धि करना। विद्या-पृथिवी से परमेश्वर पर्यन्त जो भी यथार्थ ज्ञान है, उसको यथायोग्य उपकार में लगाना। अक्रोध-क्रोध आदि दोषों को छोड़कर शान्त गुणों को धारण करना।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्य व्यवहार को ही कर्मशास्त्र में मुख्यधर्म कहा है तथा मनु के दस लक्षणों में उन्होंने 'अहिंसा' को भी जोड़ते हुए धर्म के ग्यारह लक्षण हमें बताये हैं। अहिंसा=किसी से वैर करके उसके अनिष्ठ करने में कभी न वर्तना।

मानव का अपना कर्त्तव्यपालन करना ही उसका धर्म है। धर्म किसी भी तरह की पूजा पद्धति, कर्मकाण्ड अथवा अन्य विधिविधान का नाम न होकर उन कर्त्तव्यों (कर्मो) को करना है जो मानव को इहलोक ओर परलोक दोनों में सुख प्रदान करे तथा जिनसे मानवमात्र का कल्याण होता है।

वेदों में परमात्मा ने मानव को जिन कर्मो के करने की आज्ञा दी है वह धर्म और जिनके करने का निषेध किया गया है वह है अधर्म। महर्षि कणाद कहते हैं- 'यतोऽभुदयनिः श्रेयससिद्धि स धर्मः' अर्थात् जिन कर्मो से मानव की लौकिक और पारलौकि सुख (मोक्ष) दोनों की प्राप्ति हो, वही धर्म है। यज्ञ, उपचार, अहिंसा, तप और स्वाध्याय करना भी धर्म है लेकिन योगाभ्यास के द्वारा आत्मा-परमात्मा का साक्षात् करना परम धर्म है। धर्म के जो ये वेदोक्त लक्षण हैं, जिनसे मानवमात्र का कल्याण सम्भव है, का अवश्य पालन करे।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। (ऋ 10/191/2)

अर्थात् (संगच्छध्वं) देखो, परमेश्वर हम सभी के लिए धर्म का उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! जो पक्षपातरहित न्याय सत्याचरण से युक्त धर्म है, तुम लोग उसी को ग्रहण करो, उससे विपरीत कभी मत चलो, किन्तु उसी की प्राप्ति के लिए विरोध को छोड़कर परस्पर सम्मति से रहो जिससे तुम्हारा उत्तम सुख हर दिन बढ़ता जाए और किसी प्रकार का दुःख न हो। (संवदध्वं) तुम लोग विरूद्धवाद को छोड़कर परस्पर अर्थात् आपस में प्रीति के साथ पढ़ना-पढ़ाना, प्रश्न-उत्तर सहित संवाद करो, जिससे तुम्हारी सत्यविद्या नित्य बढ़ती रहे। (स वो मनांसि जानताम्) तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढ़ाते रहो, जिससे तुम्हारा मन प्रकाशयुक्त होगा। पुरुषार्थ को नित्य बढ़ाओ, जिससे तुम लोग ज्ञान होकर नित्य आनन्द में बने रहो और तुम लोगों को धर्म का ही सेवन करना चाहिए, अधर्म का नहीं। (देवा भागं) जैसे पक्षपात रहित धर्मात्मा विद्वान लोग वेद रीति से सत्यधर्म का आचरण करते हैं, इसी प्रकार तुम भी करो। क्योंकि धर्म का ज्ञान तीन प्रकार से होता है-एक तो धर्मात्मा विद्वानों की शिक्षा, दूसरा आत्मशुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा और तीसरा परमेश्वर की कही वेदविद्या को जानने से ही मनुष्यों को सत्य-असत्य का यथावत बोध होता है अन्यथा नहीं। (ऋ.भू. 92-93 वेदोक्त धर्म)

धर्म की कसौटी यह है कि जो किसी देश, जाति अथवा वर्ग विशेष वर्ग विशेष के हित की बात न कहकर मानवमात्र के कल्याण की बात कहे अर्थात् जिसमें सार्वभौमिकता के गुण विद्यमान हों, वही सत्य धर्म है। वैदिक मानव धर्म ही इस पर खरा उतरता है। वर्तमान काल में मिथ्या मत-मतान्तरों तथा गुरुडमों ने भी अपने को धर्म का नाम देकर धर्म को इतना बदनाम कर दिया है कि मनुष्य अधर्म (सम्प्रदायवाद) को ही धर्म समझकर तथा उनके रंग-ढंग को देखकर धर्म से नफरत करने लगा है।

'नास्ति सत्यात्परो धर्मः' अर्थात् सत्य से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं। जो सत्य की बात करे समझो धर्म की बात कह रहा है। सत्य और धर्म में कोई फर्क नहीं होता अर्थात् सत्य ही धर्म है। परमेश्वर के अटल नियम भी सत्य हैं, उनका पालन करना धर्म तथा उल्लंघन करना अधर्म है। मानव के अंदर करना धर्म तथा उल्लंघन करना अधर्म है। मानव के अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी जो पांच विकार हैं, ये ही मानव के धर्म मार्ग में बहुत बड़े रोड़े हैं। मानव को इनपर विजय प्राप्त करके स्वयं अपने, अपने परिवार तथा समाज के परिवेश को कल्याणकारी बनाना चाहिए। यही मानव का कर्त्तव्य भी है तथा यही उसका धर्म भी है। आपस में एक दूसरे के प्रति आदरभाव, समर्पण का भाव जब रहेगा तो सभी में परस्पर प्रेम होगा। जब व्यक्ति अपने अधिकारों की तरफ तो देखे, लेकिन अपने कर्त्तव्यों की अनदेखी करे तभी आपस में कटुता पैदा होती है। प्रेम तथा स्नेह वहाँ नहीं रहता। जहाँ पर स्नेह होता है, वहाँ कुछ देने की

लालसा होती है लेने की नहीं, जिस तरह माता अपने पुत्र से स्नेह करती है। जरा प्रकृति की तरफ भी देखिए। एक वृक्ष सिर्फ हमें देता ही देता है–प्राणवायु, वर्षा, फल, छाया, लकड़ी तथा औषधि आदि। सूर्य–चन्द्रमा, नदी–सागर, पर्वत सभी अपने–अपने कर्त्तव्यों का पालन बिना किसी लालसा के निरन्तर करते रहते हैं तथा रमात्मा के अटल नियमों को बनाये रखते हैं। इसी तरह मानव को भी अपने कर्त्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक करते रहना चाहिए, जिससे यह समाज व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे।

धर्म का सार यह है कि 'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' अर्थात् जो व्यवहार हमें अपने लिए अच्छा नहीं लगता, उसे दूसरों के साथ भी न किया जाये। जिन कार्यो को करने में हमारी आत्मा की साक्षी ना हो अर्थात् जिन्हें करने से हमारे अन्त:करण में भय, लज्जा तथा ग्लानि के भाव उत्पन्न हों, वह कार्य नहीं करना चाहिए। जिसे करने से अन्त:करण में हर्ष और उल्लास की अनुभूति हो वही धर्म कार्य हैं, उसे सदैव किया करें। धर्मज्ञान हेतु वेद, वेदों के अनुकूल स्मृति, सज्जन पुरुषों का आचार तथा आत्मा की अनुकूलता, ये चार प्रमाण धर्म निर्णय के लिए बनाये गये हैं। धर्म को भी हमें पहले तर्क की कसौटी पर कस लेना चाहिए। जो मानव को पूर्ण बनाकर दिव्य गुणों की ओर ले जाए वही सच्चा धर्म होता है तथा यही धर्म अन्तिम समय में मानव के साथ जाने वाला गुण है। सत्य से धर्म उत्पन्न होता है तथा दया और दान से यह बढ़ता है। क्षमा से स्थिर रहता है तथा क्रोध से यह नष्ट हो जाता है। यह मानव शरीर अनित्य है। मृत्यु अवश्यंभावी है। अत: हे मानव! तू सदा रहने वाले धर्म का पालन कर।

अध्यक्ष मानव उत्थान संस्था, औरंगाबाद, मित्रोल,
जिला–पलवल (हरियाणा)–121105, मो. 9968372814

एयर इण्डिया हवाई जहाज से
दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। दिल्ली से प्रतिदिन Air India Flight AI9631 प्रात: 5.50 पर राजकोट के लिए जाती है और राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए प्रतिदिन Air India Flight AI9632 प्रात: 8–55 पर आती हैं। टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।

दिनांक 23, 24, 25 फरवरी 2017 को आयोजित ऋषि बोधोत्सव हेतु
दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

(1) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270, पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 12–55 बजे मंगलवार दिनांक 21.02.2017 **(2) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264,** सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रात: 8.20 बजे सोमवार दिनांक 20.02.2017 **(3) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे सोमवार दिनांक 20.02.2017 **(4) सर्वोदय एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478, नई दिल्ली से राजकोट** रात्रि 9.25 बजे रविवार दिनांक 19.02.2017 **(5) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., 19266 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर,** 1.10 बजे रविवार दिनांक 19.02.2017 **(6) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12916, पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.00 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा (7) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958, नई दिल्ली से अहमदाबाद** प्रतिदिन सायं 7.35 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँ: (1) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19263, राजकोट से सराय रोहिल्ला सायं 7.25 बजे शनिवार दिनांक 25.02.2017 **(2) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12915,** अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.45 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। **(3) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957,** अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.25 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 23, 24, 25 फरवरी 2017 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 15 जनवरी 2017 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल tankarasamachar@gmail.com पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय सहगल, सम्पादक टंकारा समाचार
चलभाष 9810035658, ए–419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

गृहस्थ की चार कामनाएँ

❒ महात्मा चैतन्यमुनि

वैदिक धर्म की विलक्षणता एवं श्रेष्ठता यह है कि इसमें मानव जीवन के समग्र एवं पूर्ण विकास की संभावनाएं हैं। हमारे मनीषियों ने व्यक्ति की औसत आयु सौ वर्ष मानकर उसे चार बराबर भागों में बांटा है। इन्हें ही क्रमश: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-आश्रम कहा जाता है। अपनी आन्तरिक शक्तियों का पूर्ण विकास करने और गुरुजनों से पूर्ण विकास करने और गुरुजनों से पूर्णतया दीक्षित हो जाने के बाद ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम मे अन्य आश्रमों से श्रेष्ठ इसलिए कहा जाता है क्योंकि अन्य सभी आश्रमवासी भी किसी न किसी रूप में गृहथाश्रमी पर ही निर्भर रहते हैं। वेद में सद्गृहस्थ को क्या-क्या कामनाएँ करनी चाहिए इसका ही उल्लेख नहीं है बल्कि ऐसे दिशानिर्देश भी हैं जिनसे हमारा गृहस्थारम सुखी व सम्पन्न बन सकता है। यजुर्वेद में अनेक ऐसे मन्त्र हैं जिनमें गृहस्थ को सुखी बनाने के सूत्र दिए गए है। एक मन्त्र इस प्रकार है- कव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्य गच्छतु रिप्रवाह:। इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्।। (यजु. 35-19) गृहस्थ कहता है कि (क्रव्यादम्) अपरिपक्व को खानेवाले (अग्निम्) अग्नि को (दूरम्) दूर (प्रहिणोमि) भेजता हूँ। अर्थात् हमारे घर में कोई भी अपरिपक्वावस्था में मृत्यु का ग्रास न बनें। (रिप्रवाह:) मलों व दोषों को धारण करने वाला (यमराज्यम्) यम के राज्य को (गच्छतु) जाए। (आचार्यो मृत्युर्ववरूण:) इस अथर्व वाक्य के अनुसार आचार्य ही मृत्यु व यम है। (अयम्) यह उस चंचल बच्चे से (इतर:) भिन्न (देवेभ्य:) आचार्य कुल में विद्वान उपाध्यायों से (जातवेदा:) उत्पन्न हुए-हुए ज्ञान वाला (इह एव) यहां हमारे मध्य में ही अर्थात् आचाय्र कुल से शिक्षित हो समावृत होकर घर में आए (प्रजानन्) प्रकृष्ट ज्ञान वाला ब्रह्मचारी (हव्यम्) ग्रहण करने योग्य विज्ञान को (वहतु) औरों तक ले जाने वाला हो।

मन्त्र में सद्गृहस्थ के द्वारा बहुत ही सुन्दर चार कामनाएँ की गई हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी भी सद्गृहस्थ को ये कामनाएँ करनी चाहिए और इन्हें प्राप्त करने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ भी करना चाहिए। गृहस्थ की प्रथम कामना है (क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि) कि हमारे घर में कोई भी अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु का ग्रास न बनें अर्थात् अल्पायु में किसी की मौत न हो। प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण आयु प्राप्त करके ही संसार से जाए। व्यक्ति की औसत आयु सौ वर्ष मानी गई है। हालांकि इससे भी अधिक आयु तक व्यक्ति जीवित रह सकता है मगर कम से कम सौ वर्ष की आयु तो हमारी होनी ही चाहिए। जो गृहस्थ इस प्रकार की कामना करता है उसे इसके लिए पुरुषार्थ करने की भी आवश्यकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी शास्त्रों में उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए जिन-जिन नियमों का उल्लेख है उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीना चाहिए। चरक् के अनुसार आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य ये स्वास्थ्य के आधार स्तंभ है। इसके साथ-साथ निरन्तर व्यायाम, योगासन तथा प्राणायाम आदि के द्वारा भी अपने स्वास्थ्य को ठीक रखा जाता सकता है। जिस घर में निरन्तर इस प्रकार के नियमों का पालन किया जाता है वहां पर अल्पायु में मौत होने की संभावनाएं बहुत कम हो जाती है।

दूसरी कामना की गई है कि वह सद्गृहस्थ (आचार्यो मृत्युर्ववरूण:) अपनी सन्तान को निर्मल व योग्य बनाने के लिए उसे गुरुकुल में आचार्य के पास भेजे। दोषपूर्ण जीवन ही व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। अत: इन दोषों से कोई सुयोग्य आचार्य ही हमारी सन्तान को छुड़ा सकता है। किसी योग्य आचार्य द्वारा ही दुरित दूर हो सकेंगे और भद्रोदय हो सकेगा। आचार्य को यम नाम से भी सम्बोधित किया गया है क्योंकि वह आचार्य ही अपने शिष्यों का शोधन करता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है-वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि।। (यजु. 6-14) आचार्य विद्यार्थी से कहता है कि (ते वाचं शुन्धामि) मैं तेरी वाणी को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू इस वाणी को असत्यभाषण से अपवित्र करने वाला न हो। तेरी वाणी सत्य से सदा पवित्र बनी रहे। (ते प्राणं शुन्धामि) मैं तेरी घ्राणेन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ जिससे तू घ्राणेन्द्रिय से कृत्रिम गन्धों के प्रति आसक्त न हो जाए। (ते चक्षु: शुन्धामि) तेरी आंख को शुद्ध करता हूँ जिससे तू घ्राणेन्द्रिय से कृत्रिम गन्धों के प्रति आसक्त न हो जाए। (ते चक्षु: शुन्धामि) तेरी आंख को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू पवित्र देखनेवाला बने। (ते श्रोत्रं शुन्धामि) तेरे कान को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू इन कानों से अभद्र बान्तों को न सुनता रहे और न ही परनिन्दा आदि में स्वाद लेता रहे.... (नाभिं ते शुन्धामि) मैं तेरी नाभि को पवित्र करता हूँ, जिससे तेरा जीवन संयम के बन्धन से बन्धकर चले। (ते मेढ्रं शुन्धामि) तेरी उपस्थेन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू ब्रह्मचय्र का जीवन बिताते हुए मूत्र-सम्बन्धी समस्त रोगों से बचा रहे.... (ते पायुं शुन्धामि) तेरी मल-शोधक इन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ, जिससे ठीक मलशोधन होते रहकर तू रोगों से बचा रहे। (ते चरित्रान् शुन्धामि) तेरे पावों को शुद्ध करता हूँ, जिससे तेरे चरित्र सदा ठीक बने रहें। जो शिष्य अपने आचार्य के सान्निध्य में रहकर इस प्रकार से पवित्र होकर निकलेगा वही वास्तव में मन, वचन व कर्म से पूर्ण समर्थ हो सकेगा और यही उसकी चतुर्दिक उन्नति का आधार है....

इसी क्रम में आगे वह गृहस्थ कामना करता है कि (देवेभ्य:) मेरी सन्तान प्रबुद्ध उपाध्यायों (आचार्यो) से शिक्षित होकर यहां आकर घर (सद्गृहस्थ) का निर्माण करने वाली हो...। वास्तव में आज के युग में गृहस्थ इसलिए सुखी नहीं हो पाता है क्योंकि उसकी नींव ही ठीक प्रकार से नहीं रखी जाती है। गृहस्थ में उसे ही जाने का अधिकारी माना जात था जो गुरुकुल में आचार्य के चरणों में बैठ कर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हो जाता था। उपाध्यायों के सान्निध्य में वह शारीरिक रूप से तो स्वस्थ बनता ही था मगर उसके साथ-साथ उसे मानसिकता सबलता भी प्राप्त होती थी। ऐसा स्वयं परिपक्व व्यक्ति ही सुखद और सुन्दर गृहस्थ का निर्माण करने में सफल हो पाता है.... आगे वह गृहस्थी कामना करता है कि इस प्रकार गुणों से सुसज्जित वह मेरी सन्तान अपने सुन्दर गृहस्थ का निर्माण तो करे ही मगर साथ ही जिस ज्ञान-विज्ञान से उसने अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बनाया है उस (हव्यम् वहतु) ग्रहण करने योग्य विज्ञान को औरों तक ले जाने वाला भी हो। जब हमारे समाज में विधिवत् संस्कारों का पालन किया जाता तो ये बातें स्वत: ही लोगों के व्यवहारिक जीवन में हुआ करती थी। जब विद्यार्थी आचार्यकुल से विदाई लेने लगता था तथा उस दिन उसका समावर्तन संस्कार होता था तो आचार्य उसे बहुत ही सुन्दर उपदेश देते हुए कहते थे कि सत्यं वद, धर्म चर, स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्..... हे मेरे शिष्य तुम यहां से सांसारिक जीवन में जा रहे हो मगर तुम जीवन में सदा सत्य ही बोलना, सदा धर्म का ही आचरण करना, स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करना और उस किए हुए स्वाध्याय का आगे प्रवचन करने में अर्थात् आगे फैलाने में भी कभी प्रमाद नहीं करना.... और भी आगे बहुत सुन्दर एवं सार्थक उपदेश दिया जाता था। मगर यहां विशेषत: जो सद्गृहस्थ की कामना है कि मेरी सन्तान सीखे हुए ज्ञान-विज्ञान को आगे ले जाने वाली हो.... ऐसी प्रेरणा व शिक्षा आचार्य द्वारा दी ही जाती थी।

- तहसील, सुन्दर नगर, जिला मण्डी, हि.म.

टंकारा बोधोत्सव पर होने वाली प्रतियोगिताओं हेतु

निमंत्रण

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2017 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें.....

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट:

(सौराष्ट्र प्रदेश के युवाओं के लिए)

❑ प्रवेश पत्र दिनांक 15 फरवरी 2017 तक स्वीकृत होंगे।

❑ यह टूर्नामेन्ट 20 से 22 फरवरी, 2017 के बीच में टंकारा ट्रस्ट के परिसर में होगी।

❑ विजेता टीम को शील्ड प्रदान की जाएगी।

❑ खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

(सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

❑ कक्षा 7 से 9 तक के छात्र भाग ले सकते हैं।

❑ आर्यसमाज, वैदिक धर्म के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जायेंगे।

❑ भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 20 फरवरी 2017 तक संयोजक को पहुंचा दे।

❑ प्रथम सिलेक्शन राउन्ड (लिखित) दिनांक 23 फरवरी 2017 को प्रात: 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2.00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में मुख्य मंच पर होगा।

❑ संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र और प्रारंभिक शिक्षा पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं। (संदर्भ साहित्य निकटवर्ती आर्यसमाज से प्राप्त किया जा सकता है)

❑ प्रथम तीन विजेताओं को नगद पुरस्कार क्रमश: 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा।

❑ प्रत्येक को प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

❑ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने जाने का किराया दिया जायेगा।

❑ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क ट्रस्ट की ओर से मिलेगी।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

यह प्रतियोगिता भारत के सभी गुरुकुलों के विद्यार्थियों के लिए होगी।

अत: समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसको योग दर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगित में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने नाम अपने गुरुकुल में प्राचार्य के माध्यम से प्रमाणित किये हुए फोटो सहित प्रतियोगिता संयोजक के पास भेज दे। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

❑ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 15 फरवरी 2017 तक पहुंचा देवे।

❑ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 23.02.2017 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी।

❑ एक गुरुकुल से अधिकतम दो विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।

❑ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का साधारण किराया दिया जायेगा।

❑ भोजन-आवास की सुविधा टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क मिलेगी।

❑ अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव
(प्राचार्य)
मो.9913251448

हसमुख परमार
ट्रस्टी/प्रतियोगिता संयोजक
मो. 9879333348

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा
पो. टंकारा, पिन-363650, जिला-मोरबी (गुजरात)

એ...... હાલો.........હાલો........... ઋષિમેળો

રામેન્દુ

નમસ્તે, બંધુજી, કેમ છો?

નમસ્તે, હું મઝામાં છું, પણ તમે કઈ તરફ?

રામેન્દુ : હું તીર્થયાત્રાએ જવાની તૈયારી કરું છું.

પણ તમે તો આર્યસમાજી છો, તીર્થયાત્રાઓનો તો વિરોધ કરતા રહો છો. સ્વામી દયાનન્દે સત્યાર્થપ્રકાશમાં તીર્થયાત્રાનું ખંડન કર્યું છે.

સાચી વાત છે, હું જે તીર્થયાત્રાએ જવા નિકળ્યો છું, એનું ખંડન દયાનન્દે નથી કર્યું. દયાનન્દે તો સત્યાર્થપ્રકાશના "સ્વમન્તવ્યામન્તવ્યપ્રકાશ"માં લખ્યું છે – "જેનાથી દુઃખસાગરથી પાર ઉતરાય, કે જે સત્યભાષણ, વિદ્યા, સત્સંગ, યમાદિ યોગાભ્યાસ, પુરુષાર્થ, વિદ્યાદાનાદિ શુભ કર્મ છે, એને જ તીર્થ માનું છું, ઈતર જળસ્થળાદિને નહીં." અને હું જે તીર્થયાત્રાએ જવાની તૈયારી કરી રહ્યો છું, ત્યાં દયાનન્દે જે કહ્યું છે તે પ્રમાણે હોય છે.

એમ, એટલે? મેળામાં તો ચકડોળ હોય, મોઝ-મઝાના પ્રદર્શનો હોય, ખાણી-પીણીના સ્ટોલ હોય ત્યાં દયાનન્દ ક્યાંથી આવ્યા?

જો ભાઈ, હું જઉં છું એ મેળો ખરો, પણ એનું નામ જ છે 'ઋષિમેળો'. આ મેળામાં સત્યભાષણો હોય, વેદાદિ સત્યશાસ્ત્રોના મોટા મોટા વિદ્વાનો, ત્યાગી તપસ્વી સંતોનો મેળો ભરાયો હોય અહીં. નામ પણ ન સાંભળ્યા હોય એવા સમાજસુધારકો, સામાજીક ક્રાન્તિના સૂત્રધારો અહીં ભેગા થયા હોય, તેમના સત્સંગ થાય. યોગના સાધકો, ગુરુજનો વૈદિક ક્રિયાત્મક યોગનું પ્રશિક્ષણ આપતા હોય, એના રહસ્યો સમજાવતા હોય, સમાજને યોગ્ય દિશામાં લઈ જનારા પુરુષાર્થિઓ અહીં આવ્યા હોય, આવો લાભ બીજે ક્યાં મળવાનો હતો? એટલે જ આ મેળાનું નામ ઋષિમેળો છે.

ઓહો! આવા પણ મેળા હોય? મને તો ખબર જ નથી. મને તો એમ જ હતું કે મેળા એટલે મોઝ-મઝા..... ખાવું-પીવું અને જલસા જ જલસા. ત્યાં બીજું કંઈ મળે ખરું?

અરે ઘણું બધું મળે, આ વર્ષે પણ દરવર્ષની જેમ સંમ્પૂર્ણ યજુર્વેદથી હોમાત્મક યજ્ઞ થવાનો છે. તેમાં ગુરુકુલના વેદાદિ શાસ્ત્રોના પ્રકાંડ વિદ્વાન્ આચાર્ય બ્રહ્માના આસને હશે, ગુરુકુલના બ્રહ્મચારિઓ કે જેઓ વેદાદિ શાસ્ત્રો ભણી રહ્યા છે તેઓ વેદપાઠ કરતા હશે, શાસ્ત્રીય પદ્ધતિથી બનાવેલ હવનકુંડમાં શુદ્ધ સમિધાઓ, જડીબુટ્ટિના સંમિશ્રણથી બનાવેલ હવન સામગ્રીની આહુતિઓ અપાતી હશે, સૈંકડો લોકોના સામુહિક સ્વાહોચ્ચારણ થતા હશે, ભવ્યાતિભવ્ય અલૌકિક વાતાવરણ હશે.

વાહ વાહ, યજ્ઞમાં યજમાન બનવું હોય તો કેટલા રુપિયા આપવા પડે?

અરે ભાઈ મારા, રુપિયા કરતા તમારી વેદ અને ઋષિ-મહર્ષિઓ ઉપર શ્રદ્ધા કેટલી છે એ જોવાય છે ત્યાં તો. હા યજમાન બનવા માટે જનોઈ હોવી જરુરી છે.

પણ હું તો પહેરતો જ નથી, અને મારે યજમાન પણ બનવું છે.

ચિંતા ન કરો, ત્યાં યજ્ઞના આરંભે જ આચાર્યજી જનોઈ પહેરાવશે.

હાશ..... ત્યાં બીજું શું શું મળે?

વાત ના પુછો. તમે નામ પણ ન સાંભળ્યા હોય એવા પુસ્તકોની દુકાનો હોય છે. સંસ્કૃત વ્યાકરણ, વેદ અને વેદમન્ત્રોને સમજાવતા પુસ્તકો, ઉપનિષદો, દર્શન શાસ્ત્રો, રામાયણ – મહાભારત, આયુર્વેદ, યોગ આ બધા વિષયોના પુસ્તકો એક જ જગ્યાએથી મળી જાય. પાછું તમારો સંકલ્પ હોય કે ઘરમાં હવન કરવો છે, તો તે માટે હવનકુંડ અને એને લગતા પાત્રો પણ વેચાતા મળી રહે.

મને તો આવા મેળાની ખબર જ નહોતી, ક્યારે અને ક્યાં ભરાવાનો છે આવો મેળો?

આપણા ગુજરાતમાં જ, રાજકોટ અને મોરબીની વચ્ચે આવેલ તાલુકા મથક ટંકારામાં

આ એજ ટંકારાને દયાનન્દનું જન્મ સ્થાન. અમે ઈતિહાસમાં ભણ્યા છીએ.....

.... હા... હા..... એજ. આ વર્ષે ૨૩, ૨૪ અને ૨૫મી ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૭ના દિવસોમાં મેળો ભરાશે.

હું પણ આવીશ, મને સાથે લઈ જજો. ત્યાં રહેવા જમવાનું શું?

એની ચિંતા નહીં કરવાની. ત્યાંના ટ્રસ્ટી અને મંત્રીશ્રી જાતે ઊભા રહીને ઉતારાની વ્યવસ્થા સંભાળતા હોય છે. ટંકારા બસ સ્ટેશન ઉપર ઉતરો એટલે ગુરુકુલના બ્રહ્મચારિઓ તમારા સ્વાગત અને માર્ગદર્શન માટે ઊભા હશે. રસોડામાં ત્યાંની ભાષામાં લંગર કહે છે.. વયોવૃદ્ધ ટ્રસ્ટી શ્રી લધાભાઈની આગેવાનીમાં રાજકોટ અને ભુજના આર્યવીરો અને આર્યવીરાંગનાઓ કે જેની આગેવાની ભુજના શ્રીમતી ભાનુબહેન પાસે હોય છે, તેઓ સવારની ચહા, ચહા-નાસ્તા, બપોરનું ભોજન, સાંજની ચહા અને રાત્રીના ભોજનની સેવા માટે તત્પર હશે. આપણે તો જ્ઞાન મેળવવાની, સત્સંગમાં હાજરી આપવાની, અને ઋષિ દયાનન્દજીના જન્મગૃહ અને બોધમન્દિર જોવાની જ ચિંતા કરવાની. અને હા, આ બધા માટે કોઈ ફી નથી હોતી, આપણે શ્રદ્ધા શક્તિથી દાન આપવાનું.

આ તો મારા માટે નવું જ છે, મને સાથે લઈ જજો, હું પણ મારા આખા પરિવાર સાથે આવીશ.

જરુરથી આવજો, પાછું સાંભળ્યું છે કે આ વર્ષે તો ગુજરાતના મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજયભાઈ રુપાણી પણ ઋષિબોધ રાત્રીના પર્વે ૨૪મી ફેબ્રુઆરીના દિવસે (મહાશિવરાત્રી) એ આવવાના છે.

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

www.tankara.com

पर उपलब्ध है

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा 2017

कार्यालय-आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा-22 फरवरी से 28 फरवरी 2017 तक

प्रस्थान : 22 फरवरी 2017 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा।
(21 फरवरी 2017 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 28 फरवरी 2017 को अमरोहा सायं 5.45 बजे आला हजरत एक्सप्रेस से।

परिभ्रमण कार्यक्रम: पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका, सोमनाथपुरी, टंकारा आदि ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ-जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मन्दिर आर्दि दर्शनीय स्थलों का परिभ्रमण।

सहयोग राशि: प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी-प्रबंध समिति द्वारा होगी। इस निमित्त 3500/- रूपये (तथा सीनियर सिटीजन के लिए केवल 3000/-रूपये) की धनराशि देय होगी। यह राशि आप आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं अथवा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा-अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 IFS Code SBIN0000610 में जमा करा सकते हैं।

या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय है।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश:- ACIII व II में भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। किराये का अन्तर देय होगा।) - गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। - यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें। - ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलियां, शेविंग का सामान, तेल आदि। - बहुमूल्य सामान साथ न रखें। - अपनी औषधि साथ रखें। -आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। - आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। - कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं.....

- डॉ. अशोक आर्य-संपादक/सयोंजक, मो.09412139333

धर्म का आदर

स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द के योग्य शिष्य थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए देश के कई हिस्सों में गुरुकुल कांगड़ी और अन्य संस्थाओं की स्थापना की थी। एक बार रूड़की चर्च के पादरी फादर विलियम ने स्वामी जी से पत्र लिखकर कहा–स्वामी जी, मुझे लगता है कि अगर मैं हिन्दी सीख लूँ तो शायद भारत में मैं अपने धर्म का प्रचार बेहतर ढंग से कर पाउंगा। क्या इसके लिए आप मुझे अपने गुरुकुल में प्रवेश दे सकते है? मैं वादा करता हूं कि अपने अध्ययन के दौरान मैं ईसाई धर्म की चर्चा नहीं करूंगा और उसके प्रचार की कोई कोशिश नहीं करूंगा। स्वामी जी ने पत्र के जवाब में लिखा–फादर गुरुकुल कांगड़ी में आपका खुले दिल से स्वागत है। आप यहां अतिथि बनकर हमारी सेवाएं ले सकते है। मगर आपको एक वचन देना होगा। जब तक आप यहां रहेंगे तब तक आप अपने धर्म का खुलकर प्रचार–प्रसार करेंगें ताकि हमारे छात्र भी ईसा मसीह के उपदेशों को समझ सकें और उन्हें ग्रहण कर सकें। मैं चाहता हूं कि हमारे छात्र धर्मो का आदर करना सीखें। धर्म प्रेम सिखाता है बैर नहीं। हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने अलावा दूसरे धर्मो को भी जाने। अधिक से अधिक धर्मो के विषय में जानकर हम एक अच्छे इंसान बन सकते है। स्वामी जी का यह जबाब पढ़कर फादर अभिभूत हो गए वे जब तक गुरुकुल में रहें, ईसाई धर्म के बारे में बताते रहे। यहां रहकर भारतीयों को लेकर उनकी कई धारणाएं बदल गई। वे आजीवन गुरुकुल के लिए कार्य करते रहे।

Who is the Happiest Person in the World

Happiness is in the journey, not in the destination. Happy is he who has found self. Happy is he who knows God. Happy is he who has lofty and noble aspirations. Happy is he who is rising in the world, climbing higher and higher. Happy is he who is enriching the living of al those about him. Happy is he who is enriching the living of all those about him. Happy is he who is contributing something to make this world a better place in which to live. Happy is he whose work, whose chores, whose daily tasks are labors of love. Happy is he who loves love. Happy is he who loves life. Happy is he who is happy. Happiness is every day. Happiness is now. Happiness is in the journey.

Happiness is a state of mind. It can never be found in the material things about us, in such things as wealth, position or power. Disillusioned and disappointed are they who spend a life-time harvesting and accumulating more wealth than they need only to discover, too late, that all the money in the world won`t buy a grain of happiness.

- *Abraham Lincoln*

टंकारा समाचार

के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट–पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/– रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/– रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

–प्रबन्धक

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 19 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/– रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

–प्रबन्धक

समाचार दर्पण

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में स्व. बृजमोहन मुंजाल योग साधना भवन निर्माणाधीन

प्रस्तावित योग साधना भवन का 3डी प्रारूप

जैसा कि आपको सभी को विदित ही है कि टंकारा ट्रस्ट के परम सहयोगी स्व. बृजमोहन मुंजाल जी के देहान्त एक वर्ष पूर्ण होने जा रहा है। इस उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट द्वारा दिए गए सुझाव/प्रार्थना को शिरोधार्य करते हुए मुंजाल परिवार की ओर से श्रीमती संतोष मुंजाल (पत्नि) जी ने उपरोक्त योग साधना भवन के निर्माण हेतु पुरा सहयोग देने का निश्चय किया। टंकारा ट्रस्ट एवम् टंकारा ट्रस्टीयों की ओर से सम्पूर्ण मुंजाल परिवार का विशेष आभार व्यक्त किया गया।

टंकारा एवम् निकटवर्ती क्षेत्रों में यह योग साधना भवन सबसे बड़ा भवन होगा। 50x80 फुट लम्बा चौड़े इस भवन में लगभग 800 व्यक्ति भूमि पर बैठ सकेगें। इस भवन के निर्माण हेतु उत्तर रेलवे से सेवानिवृत सिविल इंजीनियर श्री सतीश कुमार जी दुआ अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आप सभी की जानकारी के लिए गुजरात में आए भुकम्प के उपरान्त टंकारा में ध्वस्त हुई यज्ञशाला का पुनः निर्माण भी आप द्वारा ही किया गया था। जो कि पुरे भारत में एक ऐतिहासिक यज्ञशाला है। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एवम् आशीर्वाद से हमें पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त योग साधना भवन का उद्घाटन हम आगामी फरवरी 2017 के बोधोत्सव पर कर सकेंगे। वर्तमान में इस भवन की छत डाली जा रही हैं और अन्य कार्य तीव्र गति से चल रहे हैं।

गुजरात प्रान्तीय सभा का सफल आयोजन

आर्य परिवार स्नेह मिलन 2016-17 सम्पन्न

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा में रह रहे आर्य परिवारों का प्रतिवर्ष स्नेह मिलन आयोजन करती है जिसमें बीसियों परिवार शामिल होते हैं। इसमें सभी आयु वर्ग के आर्यो के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होने से सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र बनता है और लोग इसमें भाग लेने के लिए उत्साहित रहते हैं। इस वर्ष का परिवार मिलन आर्यसमाज गांधीधाम (कच्छ) संचालित जीवन प्रभात में आयोजित हुआ। जिसमें विद्वान वक्ता स्वामी शान्तानन्द सरस्वती व डॉ. देव शर्मा वेदालंकार (नई दिल्ली) को आमन्त्रित किया गया। कार्यक्रम मुख्यत्या परिवार परिचय सत्र, आर्यसंतान, आर्यवीरों-वीरांगनाओं के लिए प्रश्नमंच प्रतियोगिता, शैक्षणिक सिद्धि प्राप्त आर्य संतानों को पुरस्कार व प्रमाणपत्र वितरण, संपूर्ण वैदिक धर्मी आर्य परिवार सम्मान, वरिष्ठ आर्यो का सम्मान, खेलकूद प्रतियोगिता, ध्यान-उपासना रहें। एक दिन कच्छ भ्रमण भी कराया गया जिसमें कच्छ का प्राकृतिक सौन्दर्य काला डंगर, सफेदरण आदि व कच्छ संस्कृति की विशेषताओं को नजदीक से देखा।

विदित् हो कि गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा ने परिवार वौदिकीकरण अभियान चलाया है। जिसमें सभा द्वारा ऐसे परिवार का विशेष सम्मान किया जाता है कि जिस परिवार के सभी सदस्य संपूर्ण वैदिक धर्मी हो, नियमित सन्ध्या, यज्ञ होता हो, परिवार में सभी सामाजिक रीति-रिवाज, कर्मकांड में वैदिक नियमों का पालन किया जाता हो। किसी प्रकार की पौराणिकता से दूर हो, मृतक श्राद्ध,जातिवाद, साम्प्रदायिकता आदि से दूर हो ऐसे परिवार को परिवार स्नेह मिलन में सम्मानपत्र, शाल, श्रीफल से सम्मानित किया जाता है। इससे आगन्तुक अन्य परिवारों को भी प्रेरणा मिलती है और अपने परिवार में भी वैदिक रहन-सहन चलाने का प्रण लेते हैं। सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने सभी परिवार जनों का स्वागत किया व आशीवर्चन देते हुए कहा कि गुजरात का यह कार्यक्रम बहुत ही महत्व रखता है, इससे अन्य प्रान्तीय सभाएं भी प्रेरणा लेकर अपने प्रान्तों में भी आयोजित करे ऐसा प्रयास होना चाहिए। अन्य सम्मेलनों की अपेक्षा इस प्रकार के कार्यक्रम अधिक कारगर होते हैं। संपूर्ण कार्यक्रम में आवास-भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान श्री वाचोनिधि आचार्य, मन्त्री श्री गुरुदत्त शर्मा, ट्रस्टी श्री जयन्ती कोरिंगा आदि के निर्देशन में की गई जिसे सभी ने सराहा और धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन व संयोजन सभी मन्त्री हसमुख परमार ने किया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का चार दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें पं. बालकृष्ण जी शास्त्री ने मंगल यज्ञ करवाया, ध्वजारोहण श्रीमती सुषमा एवं श्री रामकृष्ण जी द्वारा किया गया। दिल्ली से पधारे डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी ने अपने प्रवचन में बतलाया कि भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता में कहा कि ''वेद'' परमात्मा की वाणी है जो हमें कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। मुजफ्फनगर से पधारें पं. धनयाम प्रेमी व भूपेन्द्र आर्य ने प्रभु भक्ति देश भक्ति व महर्षि दयानन्द पर आधारित भजन सुना कर सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर गवर्नमेंट कॉलेज फार वुमन लुधियाना की पांच छात्राओं को बी.ए. फाइनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बस्सी द्वारा आरक्षित राशी से पारितोषिक एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

❑❑❑

आर्यसमाज मरूआ सुमेरपुर को 40वें वार्षिकोतसव स्थानीय रामलीला मैदान में सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न लिखित वैदिक विद्वानों ने अपने उपदेशामृत की वर्षा की आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, पं. सत्यपाल सरल, तपोनिष्ठ स्वामी रामानन्द जी, कु. ललिता आर्या, श्री हरीसिंह हरी। प्रथम दिवस उद्घाटन समारोह में नगर पंचायत की अधिशाषी अधिकारी कु. नीतू सिंह द्वारा ओ३म् ध्वाजा रोहण से सम्पन्न हुआ तथा कु. नीतू सिंह जी ने प्रमुख यजमान के साथ में बैठकर यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी के कर कमलों द्वारा मुख्य अतिथि अधिशाषी अधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। यज्ञ वेदियों का निर्माण करके 108 यजमानों को सपत्नीक यज्ञ में बैठकर आहुतियां प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

❑❑❑

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढ़ाने में नियमित रूप से सक्रिय **आर्य समाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत** ने अपने सफर के 100 वर्ष पूरे कर लिये हैं। विदुषी आचार्य सूर्यादेवी जी ने अपने सारगर्भित प्रवचनों से एवं वेद मन्त्रों की सरल व्याख्या द्वारा धर्मप्रेमी, जिज्ञासु जनता का मार्ग दर्शन किया। डॉ. राणा गन्नौरी जी (दिल्ली) ने मुलतानी, हिन्दी भाषा में गायत्री मन्त्र और वेद मन्त्र ''स्तुता मया वरदा वेद माता'' का कवितानुवाद प्रस्तुत कर जनसामान्य को प्रेरित किया।

पं. रामचन्द्र आर्य जी (सोनीपत) ने पूरे सप्ताह अपने आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से वैदिक, दार्शनिक सिद्धान्तों तथा गुत्थियों को सरल ढंग से समझाने का सत्प्रयास किया। शोभा यात्रा की सर्वत्र प्रशंसा की गई। इस भव्य शताब्दी समारोह की शेष सभाएं, वेद रक्षा सम्मेलन, परिवार रक्षा सम्मेलन, युवा एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गौ कृषि आदि रक्षा सम्मेलन, भ्रान्ति निवारण तथा संस्कृति रक्षा सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, आर्य समाज गौरवशाली अतीत। इस समारोह के अवसर पर पाणिनि महाविद्यालय (सोनीपत) के यशस्वी आचार्य तथा विद्वान प्र. प्रदीप जी व्याकरणाचार्य तथा महर्षि दयानन्द के वीर सैनिक ब्र. जीवानन्द नैष्टिक का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया।

सुविचारः *बड़ो से बात करने का तरीका आपकी 'तमीज' बताता है और छोटों से बात करने का तरीका आपकी 'परवरिश'। अपने शब्दों में ताकत डालें आवाज में नहीं, क्योंकि बारिश से फूल उगते हैं, बाढ़ से नहीं....*

निर्वाण दिवस आयोजित

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण दिवस आर्य समाज हुड्डा में समारोहपूर्वक मनाया गया। मुख्य प्रवक्ता डॉ. हरि प्रशाद शास्त्री जी ने कहा कि यदि हम अपने जीवन का उत्थान चहाते है तो हमें वेदों की ओर मुड़ना चाहिए। उन्होंने डी.ए.वी जैसी शिक्षण संस्थाओं की शिक्षण क्षेत्र में योगदान देने के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की। हमें विद्वानों, उपदेशकों तथा अतिथिजनों का तय दिल से सम्मान करना चाहिए। यज्ञ आचार्य संजीव वेदालंकार तथा आचार्य संजय शास्त्री जी ने विधिपूर्वक तथा मन्त्रोचारण के साथ सम्पूर्ण कराया। प्रसिद्ध भजनोपदेक आचार्य कुलदीप जी आर्य ने अपने मनमोहक आर्य समाज, देशभक्ति के भजनों से उपस्थित आर्यजनों का मनमोह लिया।

गुरुकुल स्थापना समारोह

आर्य समाज, सैक्टर 22-ए, चण्डीगढ़ के प्रधान श्री सोमदत्त शास्त्री की प्रेरणा एवं प्रयास से आर्य समाज की कार्यकारिणी एवं साधारण सभा ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि आर्य समाज के विशाल भवन में उपलब्ध लगभग 30 कमरे उपयोग में लाने के लिए यहां एक गुरुकुल संचालित किया जाए जिससे आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को और अधिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आर्य समाज के विशाल भवन का सदुपयोग भी सुन्दर तरीके से हो सकेगा। आर्य समाज के इस ऐतिहासिक निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को गुरुकुल स्थापना समारोह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अनेक गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (दिल्ली) ने स्पष्ट किया कि जब तक हम आर्ष पाठविधि के अनुसार गुरुकुल नहीं चलाएँगे तब तक आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित नहीं रखा जा सकता।

युवा वैदिक विद्वान पुरस्कृत

आर्य जगत् के उदीयमान युवा वैदिक विद्वान, ओजस्वी वक्ता, विभिन्न, ओजस्वी वक्ता, विभिन्न संस्थाओं के मार्गदर्शक, ओड़िया भाषा के अनेक पुस्तकों के सम्पादक तथा कुशल लेखक, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट ओड़िशा प्रदेश के संगठन मन्त्री, गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जिला-नुआपड़ा (ओड़िशा) के सफल संचालक **पूज्य आचार्य डॉ. सुदर्शन देव जी** को परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान अजमेर में 133वां महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह 4,5,6 नवम्बर 2016 के पावन अवसर पर डॉ. प्रियव्रतदास वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस पुरस्कार में 21000/- की नगद राशि शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। पूज्य आचार्य जी सादा जीवन उच्च विचारों के आदर्श त्यागी तपस्वी एवं साधक प्रवृत्ति के हैं, आपकी प्रेरणा से अब तक शताधिक आदर्श दैनिक अग्निहोत्री परिवार तैयार हुये हैं तथा सत्तर के लगभग आदर्श गृहस्थियों को वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित कराके अनेक संस्थाओं में सेवा के लिए नियुक्त किये हैं तथा अनेक ब्रह्मचारी आपकी प्रेरणा व मार्गदर्शन में अध्ययनरत तथा विविध क्षेत्रों में सेवारत हैं।

कार्तिक मासीय यज्ञ आयोजित

आर्य समाज मन्दिर राजगढ़ (अलवर) में कार्तिक मासीय यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन एक नये जोड़े को मुख्य यजमान बनाया गया। 30 दिन तक 30 नये जोड़ों ने श्रद्धा भक्ति के साथ यजमान बनकर यज्ञ में आहूतियां दी। यज्ञ के आचार्य श्री विनोदी लाल जी दीक्षित थे। जिन्होंने अपने भजनों एवं आर्य सिद्धान्तों तथा वैदिक आदर्शो की शिक्षा का समा बाँधे रखा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी देवानन्द जी सरस्वती थे जिन्होंने वेदोपदेश एवं महापुरुषों के कृतित्व पर प्रकाश डाला।

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती स्मृति सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में स्व. स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती जी की स्मृति ऐसे संन्यासीवृन्द जिनका अपना कोई मठ नहीं है और वे भारत भर में भ्रमण कर आर्य समाज और वेद का प्रचार करते हैं, को ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर 24 फरवरी 2017 को रूपये 25000/- की राशि से सम्मानित किया जायेगा।

आदरणीय संन्यासीवृन्दों से प्रार्थना है कि वे अपने द्वारा किए गए वेद प्रचार का विवरण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई के पते पर सूचित करने की कृपा करें। प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वसान्य होगा।

इसी अवसर पर इस वर्ष से किसी एक ऐसे विद्वान जो पूर्ण कालिक वेद एवम् वेदिक मान्याताओं के प्रचार प्रसार में संलग्न है और किसी भी प्रतिनिधि सभा से संबंधित नहीं है। (स्वतन्त्र रूप से सेवाएं दे रहे हैं। ऐसे विद्वानों को टंकारा बोधोत्सव पर सम्मानित किया जाएगा।) कृपया करके विस्तृत जानकारी चित्र सहित निम्न पते पर तुरन्त भेजें।

आर्ष गुरुकुलों हेतु आर्थिक सहयोग

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने निश्चय किया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से ऐसे आर्ष गुरुकुलों को सहायता राशि दी ाये जिनमें उनके द्वारा गौशाला चलाई जा रही हैं। अतः समस्त गुरुकुलों के प्राचार्यो से निवेदन है कि अपने गुरुकुल में चल रही गौशाला का विस्तृत विवरण जिसमें गायों की संख्या आदि की जानकारी हो, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य माटूंगा, मुम्बई के पते पर भिजवाने की कृपा करें। प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वमान्य होगा।

निवेदक
अरूण अब्रोल, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई

प्रतियोगिताओं का आयोजन

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास और आर्य समाज खेड़ा अफगान द्वारा आयोजित दोनों पूर्व में कराई गई वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनि प्रतियोगिताओं कक्षा 6 से कक्षा 9 तक, कक्षा 10 से कक्षा 12 तक का परिणाम एवं पारितोषिक से किया गया। इस अवसर पर जम्मू से पधारे आचार्य विद्याभानु शास्त्री ने कहा आर्य समाज के छटे नियम में बताया गया है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस अवसर पर पद्म श्री भारत भूषण जी ने कहा कि बच्चों को भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराना ही इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है। नकुड़ क्षेत्र के विधायक श्री धर्मसिंह जी सैनी ने कहा कि युवाओं का नैतिक पतन रोकने के लिए यह आवश्यकता है कि युवाओं का उचित मार्गदर्शन हो।

वधू चाहिए

आर्य परिवार का सुन्दर, पतला, गोरा, शुद्ध शाकाहारी गर्ग अग्रवाल लड़का जन्मतिथि 28.06.1990, समय 7.10 ए.एम., बराड़ा, जिला-अम्बाला, कद 5'-9'', B.Tech, (CSE) Working in Gurgaon MNC, Senior Software Developer 8 LPA, के लिए सुन्दर, गोरी, पतली कार्यरत आर्य परिवार की कन्या चाहिए। इच्छुक व्यक्ति फोटो बायोडाटा भेजें। सम्पर्क-9416187411, Email:arya.travels01@gmail.com

अभिनन्दन समारोह आयोजित

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ कन्या गुरुकुल शिखापुरम् की प्राध्यापिका ऊर्मिला आर्या के ब्रह्मत्व तथा प्रवेश आर्या के संयोजकत्व में आरम्भ हुआ। चन्द्रदेव शास्त्री एवं रामपाल शास्त्री के संयोजन में तथा श्री आजाद सिंह लाकड़ा की अध्यक्षता एवं श्री रामस्वरूप आर्य, श्री देवदत जी डबास, श्रीमती सुमेधा डबास व बालेन्द्र कुण्डु से पधारे। रामपाल शास्त्री ने अपने वक्तव्य में मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यो का विवरण देते हुए सम्पूर्ण संस्था के इतिहास एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। आगन्तुक अतिथि महानुभावों का स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् के पट्टे तथा फूलमालाओं से सम्मानित किया। सम्मानि विद्वान विदुषी एवं सामाजिक कार्यकर्ता-1. स्वामी सर्वदानन्द जी, 2. आचार्या पुष्पा आर्या, 3. आचार्य धनञ्जय, 4. डॉ. सुमन आर्या, 5. पं. रामरख आर्य भजनोपदेशक, 6. ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, 7. आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, 8. ब्रह्मचारिणी प्राध्यापिका ऊर्मिला आर्या। 9. प्रचारिका। 10. पं. आचार्य ऋषिपाल जी, 11. आचार्या लक्ष्मी भारती, 12. स्वामी परम चैतन्य महाराज, 13. ब्रह्मचारी सहन्सरपाल। अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह के इस कार्यक्रम में तेरह विद्वान विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, भजनोपदेशकों तथा पुरोहितों का सम्मान करते हुए उन्हें अभिनन्दन पत्र, शॉल, स्मृति चिन्ह एवं ग्यारह तथा पन्द्रह हजार रूपये की सम्मानित राशि से सम्मान किया गया।

ऋषि निर्वाण उत्सव आयोजित

मानसरोवर कॉलोनी जयपुर के चित्रकूट पार्क में आर्य समाज समन्वय समिति एवं दिव्य वैदिक सत्संग मंडल जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि दयानन्द के 133वें निर्वाण दिवस पर यज्ञ एवं श्रद्धांजलि अर्पण कार्यक्रम आयोजित हुए। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ.कृष्ण पाल सिंह, संयोजक यशपाल यश एवं कार्यक्रम संचालक सुनील अरोड़ा रहे। डॉ. कृष्ण पाल सिंह ने सन्ध्या एवं स्वाध्याय के संकल्प को ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि कहा।

ठाकुर विक्रम सिंह जी के जन्मोत्सव पर आर्य विदुषीयाँ सम्मानित

गत दिनों आर्यसमाज डिफैन्स कॉलोनी नई दिल्ली के सभागार में ठाकुर विक्रम सिंह जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य **आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह** का आयोजन किया गया। जिसमें भारतवर्ष की लगभग 200 आर्य विदुषी महिलाओं को सम्मानित किया गया।

इसी उपलक्ष्य में माता सत्यप्रियातिजी (हिमाचल प्रदेश) को उन द्वारा वेद प्रचार में दिए जा रहे योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

टंकारा यात्रा 2016

सैरकर दुनियाँ की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ। जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ।।

।। यात्री बनकर आयें-मित्र बनकर जाएं ।।

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो।
टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम, द्वीव

टंकारा यात्रा अवधि 7 दिन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी के प्रेरणा से धर्म प्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरी धाम तीर्थ यात्रा का सुनहरी अवसर। 18.02.2017 को दिल्ली सराय रोहिला स्टेशन से चलेंगे व 26.02.2017 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल : ❑ 18.02.2017 दिल्ली सराय रोहिला से पोरबन्दर एक्सप्रैस द्वारा द्वारका के लिए प्रस्थान। ❑ 19.02.2017 भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारकाधीश मन्दिर ❑ 20.02.2017 श्रीकृष्ण महल व भेंट द्वारका, गोपी तालाब ❑ 21.02.2017 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर ❑ 22.02.2017 सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व द्वीव का समुद्री किनारा व सनसैट। ❑ 23.02.2017 प्रातः टंकारा के लिए प्रस्थान शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 24.02.2017 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 25.02.2017 प्रातः नाश्ते या लंच के पश्चात टंकारा से दिल्ली के लिए प्रस्थान। ❑ 26.02.2017 दिल्ली स्टेशन पर यात्रा समाप्त।

नोटः- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है अगर किसी व्यक्ति के पास रेलवे का पास है तो वह **9,500/-** रूपये देकर जा सकता है।

यात्री किराया-स्लीपर क्लास : 13800/-, राजधानी 3 ए.सी. 16800/-, राजधानी 2 ए.सी. 19800/-, ❒ सीनियर सिटिजन- स्लीपर क्लासः 13400/-, राजधानी 3 ए.सी. 15700/-, राजधानी 2 ए.सी. 18700/-, ❒ महिला सीनियर सिटीजन- स्लीपर क्लासः 13200/-, राजधानी 3 ए.सी. 15400/-, राजधानी 2 ए.सी. 18400/-

यात्रा नियम : ❒ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व नौकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। ❒ कार्यक्रम में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार, संयोजक का होगा। ❒ हमारी यात्रा में अकेली महिला व वृद्ध महिलाऐं भी यात्रा कर सकती हैं क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❒ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक या ड्रफ्ट ARYA TRAVEL अथवा विजय सचदेव के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❒ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेगें। इस यात्रा में रहने व खानें की व्यवस्था Hotel, Tourist, Class, Non Star, Neat & Clean होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❒ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्पयूटर द्वारा जो सीट नम्बर मिलेगा वही आपका सीट नम्बर होगा। ❒ कृपया सभी सीनियर सिटीजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखें। ❒ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी-कभी सम्भव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसन्द की खाने-पीने की मन पसन्द वस्तुएं अपने पास रखें। ❒ सीट बुक कराने के लिए ए.सी. के यात्री 4000/- रूपये अन्य यात्री 2000/- रूपये अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रद्द करवाता है तो 4000/- रूपये प्रति व्यक्ति कटवाने होंगे। क्योंकि होटल व बस बुक हो चुकी होती है।

आर्य ट्रैवल

अमित सचदेवा (मो. 9868095401, 9350064830),

विजय सचदेवा (सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा)

2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, फोन : 011-45112521, मो. 09811171166

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

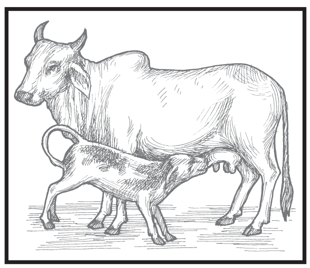

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या
उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष)

समय में आप बुद्धिमान कीजिए।

महामन्त्र गायत्री के द्वारा भी हम **धियो यो नः प्रचोदयात्** कहते हुए ईश्वर से मेधा बुद्धि की कामना करते हैं।

शिव संकल्प मंत्रों में भी हम शुभ संकल्पो वाली मेधा बुद्धि की कामना करते हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि ईश्वर से उपासक को उपासना करते हुए उज्ज्वल भावों, शुभ संकल्पों, मेधा बुद्धि, परोपकार के कार्यो के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए उन सर्वहितकारी कार्यो की सफलता में सहायता, शक्ति, पराक्रम, बु) देने की कामना करनी चाहिये।

– 602 जी एच 53, सैक्टर 20 पंचकूला, मो.0967608686

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा 2017

(ऋषि बोधोत्सव 23 से 25 फरवरी 2017)

मान्यवर/मान्या, सादर नमस्ते।

आपको जान कर हर्ष होगा कि ऋषि जन्मभूमि टंकारा की यात्रा का कार्यक्रम बनाया है। इस बार कुछ बहन-भाईयों के अनुरोध पर टंकारा यात्रा के पश्चात् गांधीधाम जाने का भी विचार है। गांधीधाम वह स्थान है जहां पर भुज (कच्छ) के क्षेत्र में 2001 में भीषण भूंचाल आया था जिसके कारण बहुत से बच्चे अनाथ हो गये थे। उनमें से लगभग 250 बच्चों के पालन-पोषण, पढ़ाई लिखाई आदि का पूरा भार आर्य समाज गांधीधाम ने उठा रखा है। कच्छ के क्षेत्र में हमारा भ्रमण-स्थल देखने का भी कार्यक्रम है। वहां का मौसम यहां के अप्रैल-मई जैसा होगा। अतः आप हल्का-फुल्का बिस्तर, पहनने के कपड़े एवं केवल दैनिक उपयोग की सामग्री, दैनिक उपयोग में आने वाली दवाई साथ रखें।

कार्यक्रम

- ❑ दिनांक 20 फरवरी 2017 (सोमवार)-हम DLF Porbander ऐक्सप्रैस (गाड़ी न. 19264) द्वारा रवाना होंगे। यह गाड़ी सराय रोहिला, दिल्ली से प्रातः 8.20 पर चलकर दिल्ली कैण्ट से होकर जाती है। कृपया स्टेशन आधा घण्टा पहले पहुँचे। दोपहर का भोजन साथ लायें। रात्रि का भोजन गाड़ी में मिलेगा।
- ❑ दिनांक 21 फरवरी 2017 (मंगलवार)-हम प्रातः लगभग 8.00 बे राजकोट स्टेशन पर पहुंच जायेंगे। प्रातः का नाश्ता राजकोट स्टेशन पर होगा। तत्पश्चात् टैक्सी-वैन द्वारा टंकारा जायेंगे जो कि वहां से डेढ़ घंटा का सफर है। दोपहर का भोजन टंकारा में होगा।
- ❑ दिनांक 22-24 फरवरी 2017 (बुधवार से शुक्रवार)-हम टंकारा में बोधोत्सव का आनन्द लेंगे।
- ❑ दिनांक 25 फरवरी 2017 (शनिवार)-प्रातः नाश्ता लेकर हम गांधीधाम के लिए बस द्वारा रवाना होंगे जोकि 3-4 घण्टे का सफर है।
- ❑ दिनांक 26-27 फरवरी 2017 (रविवार-सोमवार)-इस दौरान कच्छ क्षेत्र में भ्रमण करेंगे जिसमें कांडला पार्ट, Run of Kutch (जिसे White Run भी कहा जाता है), श्यामजी कृष्ण वर्मा की समाधी, भुज आदि जायेंगे। कुछ समय निकाल कर कच्छ की मार्किट घूमेंगे। इस दौरान हम आर्य समाज गांधीधाम में ठहरेंगे। खाने आदि का प्रबन्ध भी अधिकतर आर्य समाज की तरफ से होगा।
- ❑ दिनांक 28 फरवरी, 2017 (मंगलवार)-हम गांधीधाम से आला हजरत (बरेली एक्स) (गाड़ी न. 14312) दोपहर 2 बजे दिल्ली के लिए चलेंगी जोकि अगले दिन दिल्ली कैण्ट तथा सराय रोहिला से होती हुई पुरानी दिल्ली 2.30 बजे दोपहर पहुंचेगी।

अनुमानित व्ययः

(1) केवल टंकारा आने-जाने का (3 Tier AC): साधारण-3900/- रूपये, वरिष्ठ नागरिक पुरुष-2900/- रूपये, वरिष्ठ नागरिक महिला-2600/- रूपये, (Sleeper II) साधारण-2200/-रूपये, वरिष्ठ पुरुष 1800/रूपये, वरिष्ठ महिला-1700/-रूपये।

(2) टंकारा तथा गांधीधाम जाने वाले: टंकारा के व्यय में अनुमानतः 2000/- रूपये जोड़ लें क्योंकि टंकारा से गांधीधाम जाना, भ्रमण करना, बस द्वारा होगा। यह व्यक्तियों की संख्या पर भी निर्भर है। जो भी खर्च होगा, हिसाब कर लिया जाएगा।

यह व्यय No Profit No Loss के आधार पर रखा गया है। इसमें खाने-पीने, ठहरने, गाड़ी का किराया। (3 Tier AC) आदि सम्मिलित है। राशि कृपया 15 नवम्बर 2016 तक अवश्य निम्न व्यक्तियों के पास जमा करवा दें। हालात के अनुसार प्रोग्राम में थोड़ी-बहुत तबदीली हो सकती है।

विशेषः ध्यान रहे कि रेलगाड़ी की बुकिंग 4 महीने पहले से करानी होगी, इसलिए आप अपने नाम और राशि कार्यक्रम शुरु होने के कम से कम 100 पहले अवश्य जमा करा दें। अगर कोई भाई-बहन किसी कारणवश न जा सके तो कृपया जाने से 7 दिन पूर्व हमें सूचित कर दें। कम से कम कटौती के बाद उसकी राशि लौटा दी जायेगी। टंकारा से ही वापिस आने वाले व्यक्तियों का प्रबन्ध कर दिया जायेगा। 25 फरवरी शाम 7 बजे राजकोट से गाड़ी चलती है। किराये में रियासत लेने वाले अपना ओरिजनल प्रमाण पत्र साथ रखें।

किसी कारण 3 Tier AC में सीट न मिलने पर IInd Sleeper में बुकिंग करवा दी जाएगी। किराये में जो अन्तर होगा उसे लौटा दिया जायेगा। जो भाई-बहन 2 Tier AC में जाना चाहे, सीट मिलने पर उनकी बुकिंग करा दी जायेगी। किराये में जो अन्तर होगा वाह उनको देना होगा।

विशेषः दिल्ली कैंण्ट स्टेशन पर सभी गाड़ियाँ रूकती है। वहीं से गाड़ी पकड़ सकते हैं और वहाँ उतर भी सकते है।

ऊषा अरोड़ा/राम चन्द अरोड़ा

सी-5ए, 216 जनकपुरी, नई दिल्ली

मोबाइल न. 9910650690, 011-25521814

ईश्वर प्रार्थना क्यों एवं कैसे विषय पर वैचारिक गोष्ठी सम्पन्न

वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन आर्य ऑडिटोरियम 'ईस्ट ऑफ कैलाश' में किया गया। उक्त गोष्ठी की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि इसमें ईसाई एवं इस्लाम सहित कई मतों के विद्वानों ने भाग लिया। वैदिक विद्वान में डॉ. महेश विद्यालंकार जी आचार्य डॉ. वागीश जी, डॉ. विनय विद्यालंकार, इस्लामिक विद्वान जामिया मिलिया, इस्लामिया विश्वविद्यालय के प्रो. सैय्ययद रजि, अहमद कमाल, पौराणिक स्वामी प्रज्ञानन्द जी, ईसाई मत के प्रो. विक्टर एडविन एसजे एवं प्रो. (डॉ.) मदन मोहन वर्मा ने अपने विचार रखे। गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान तथा चेयरमैन, ऐ.के.सी. ग्रुप) एवं डॉ. अमीता चौहान (चेयरपर्सन, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल्स) रहे। अध्यक्षता सांची विश्वविद्यालय भोपाल की पूर्वकुलपति डॉ. शशि प्रभा 'कुमार' ने की एवं आशीर्वाद स्वामी

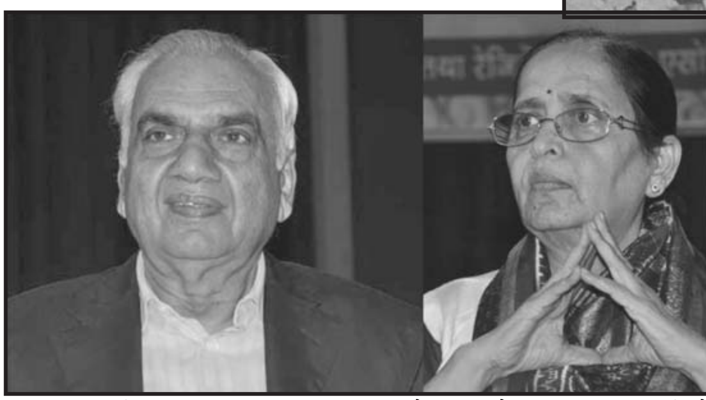

प्रणवानन्द जी का हुआ। उद्घाटन भाषण में डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने कहा-प्रार्थना शक्ति है, प्रार्थना भक्ति है, प्रार्थना प्रेरणा है, प्रार्थना जागरण है, प्रार्थना आत्म कल्याण के लिए की जाती है।

वैदिक पक्ष में डॉ. वागीश आचार्य जी ने ईश्वर प्रार्थना सम्बन्धी सभी प्रश्नों तथा प्रार्थना क्या है? उसका लाभ क्या है? क्या प्रार्थना से ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था प्रभावित होती है? आदि का रोचकता सहित सटी उदाहरणों के माध्यम से समाधान किया।

वैदिक पक्ष के ही दूसरे वक्ता डॉ. विनय विद्यालंकार ने स्तुति प्रार्थना तथा उपासना का भेद स्पष्ट किया। 'प्रार्थना' उस क्रिया का नाम है जब पूरे सामर्थ्य से पुरुषार्थ करने के उपरान्त परमात्मा से सहायता मांगी जाती है। बिना पुरुषार्थ के प्रार्थना स्वीकार ही नहीं होती।

इस्लाम मत में प्रार्थना का स्वरूप प्रस्तुत करते हुए प्रो. सैय्ययद रजि कमाल जी ने कहा कि अल्लाहताला ने ये दुनिया अपनी इबादत के लिए बनाई है वो खुदा चाहता है कि हर बन्दा प्रार्थना (इबादत) करे तो वह खुश होता है। ईसाई मत के डॉ. विक्टर एडविन ने कहा कि ईश्वर की प्रार्थना प्रत्येक मनुष्य का आवश्यक कर्त्तव्य इसलिए है क्योंकि यह समस्त सुख सुविधाएं ईश्वर ने प्रदान की हैं। जब इंसान उसकी प्रार्थना करता है तो वह खुश होकर उसके पापों को अनदेखा कर देते हैं। गोष्ठी की अध्यक्षता कर रही डॉ. शशि प्रभा कुमारी जी ने महर्षि दयानन्द की प्रार्थना पुस्तक आर्याभिविनय के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि परमात्मा के जितने अधिक गुणों का कथन प्रार्थना में किया जाता है उतनी ही विनम्रता प्रार्थी के अन्दर बढ़ती चली जाती है। गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक चौहान जी व डॉ. अमिता चौहान जी ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा प्रार्थना जैसे संवेदनशील भावना प्रधान विषय पर विचारगोष्ठी का तरीका उत्तम बताया। गोष्ठी के समापन से पूर्व श्रोताओं की ओर से आई शंकाओं का समाधान भी किया गया। इस कार्यक्रम में हीरो ग्रुप की मुंजाल शोवा कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री योगेश मुंजाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य धर्मपाल आर्य जी, टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री अजय सहगल, दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्रीमती बाला चौधरी, श्री नीतिन्जय चौधरी आदि अनेक गणमान्यजन एवं अतिथि उपस्थित थे।

आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग का 92वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का 92वां वार्षिकोत्सव तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। चार दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में हजारों आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। आर्य समाज (अनारकली), आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने उत्सव के समापन अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कालेधन पर वार किया है हम सब कालेमन पर वार चाहते है। मन बहुत चंचल है बन्दर की तरह हरकत करता है। मन भागना रहता है। चंचलमन को शान्त करें, चंचल मन को शान्त करने के लिए कुछ व्यायाम करें, मन चंचल है तो मानसिक साधना करें। ब्रह्मचर्य का अर्थ है, ब्रह्म में विचरना-विचरण करना जैसे बच्चा मां की गोद में बैठकर हर चिन्ता से मुक्त हो जाता है वैसे ही हम ईश्वर की गोद में बैठकर निश्चिन्त हो सकते हैं। यह सब स्वाध्याय से ही मिलेगा हम वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करें। अपना अध्ययन करना भी स्वाध्याय है अपने बारे में सोचें अपने कर्म को याद करें यह भी स्वाध्याय है। आत्मा मैला नहीं होता है, मैला होता है सूक्ष्म शरीर। सूक्ष्म शरीर को साफ करें

तभी हमें अच्छा फल और शरीर मिलेगा। एक मात्रा ''ओ३म'' का जाफ करें इससे बहुत ही लाभ मिलेगा। सत्संग का अर्थ ''सत्य का संग करना है न कि नाच गाना आदि। जो अच्छे संग करेगा वही तरेगा। अगर अच्छा काम करते रहेंगे तो अवश्य ही हमारा कालामन स्वच्छमन हो जायेगा।

वैदिक प्रवक्ता डॉ. वागीश (ऐटा) ने ईश्वर को हम क्यों मानें? ईश्वर कहां है व कैसा है? एवं ईश्वर की प्रार्थना उपासना क्यों और कैसे?'' विषय पर सविस्तार चर्चा की।

इस वर्ष वार्षिक उत्सव में महात्मा आनन्द स्वामी चित्रकला, स्वामी श्रद्धानन्द श्लोक उच्चारण, महात्मा हंसराज नुक्कड़ नाटक एवं श्री अमीचन्द गायन प्रतियोताओं का आयोजन किया जिसमें दिल्ली एन.सी.आर. एवं अन्य जिलों से डी.ए.वी. के 40 विद्यालयों के 800 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं एवं विद्यालयों को अन्तिम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आर्य समाज (अनारकली) के प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने पुरस्कृत किया।

डी.ए.वी. स्कूलों के प्रधानाचार्यो की एक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें डी.ए.वी. स्कूल पुष्पांजलि पीतमपुरी श्रीमती रश्मि बिस्वाल ने ''आर्य समाज एक प्रेरणा'', डी.ए.वी. स्कूल फेस-4, अशोक विहार की श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने मेरी अस्मिता क्या है'', डी.ए.वी. स्कूल विकासपुरी की श्रीमती चित्रा नाकरा ने'' वर्तमान पीढ़ी शिक्षा और बदलता परिवेश तथा सी.जे. डी.ए.वी. स्कूल, मेरठ ने ''शिक्षा के बदलते संदर्भ में आर्य समाज'' विषय पर अपने-अपने विद्वतापूर्ण विचार व्यक्त किये।

उत्सव में चारों दिन डी.ए.वी.प्रबन्धक समिति के अनेक पदाधिकारी तथा अनेको आर्य समाज के सदस्यों ने भाग लिया। चारों दिन आर्य समाज (अनारकली) का सभागार श्रोताओं की भीड़ से खचाखच भरा रहा। आर्य प्रादेशिक सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के पदाधिकारियों तथा निदेशकों ने विशेषरूप से इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज की। श्रीरामनाथ सहगल, श्री टी.आर. गुप्ता, श्री आर.एस. शर्मा, प्रिमोहन लाल, श्री अजय सूरी, श्री एस.के.शर्मा, डॉ. बी.सिंह, श्री.एच.एल. भाटिया, श्री एस.एम. गुप्ता, श्रीमती अदलखा, श्रीमती मणी सूरी, श्री जे.के. कपूर, श्री अरूण अदलखा, श्री बलेचा जी, श्री श्री राम शर्मा, श्री आर.आर. भल्ला, डॉ. मनमोहन, श्री अजय सहलग, प्रि. स्नेह मोहन आदि की उपस्थिति प्रेरणास्पद रही। इनके अतिरिक्त दिल्ली एवं एन.सी.आर. के डी.ए.वी. स्कूलों के भी प्रिंसिपलों तथा सैकड़ों आर्य जनों ने उत्सव में भाग लिया। डी. ए.वी. भठिण्डा के छात्रों द्वारा बनाये चित्रों की प्रदर्शनी आकर्षक रही। वार्षिकोत्सव का यज्ञ पं. धनश्याम आर्य सिद्धान्ताचार्य एवं श्री प्रमोद शास्त्री के ब्रह्ममत्व में सम्पन्न हुआ। उत्सव के सभी सत्रों का सफल संचालन आर्य समाज के मन्त्री ब्रि.ए. के अदलखा ने किया तथा आर्य समाज (अनारकली) के कार्य प्रधान श्री अजय सूरी ने सबका धन्यवाद किया। अन्त में शान्तिपाठ के बाद उत्सव में पधारे सभी आर्य जनों ने प्रीतिभोज में भाग लिया।

टंकारा समाचार जनवरी 2017
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-01-2017
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.12.2016

हर कलाकार अपनी कला को अपना ही नाम देता है,
लेकिन माँ जैसा कोई कलाकार इस संसार में नहीं है,
जो स्वयं बच्चे को जन्म देकर
नाम उसके पिता का देती है।

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 23, 24, 25 फरवरी 2017 (गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 18 फरवरी 2017 से 24 फरवरी 2017 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्रीमती अंजलि (करनाल), श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

बोधोत्सव

शनिवार दिनांक 24.02.2017

मुख्य अतिथि : माननीय श्री विजय रूपाणी (मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार)

विशिष्ट अतिथि : श्री एच आर गन्धार (प्रशासक डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी, जालन्धर)

अध्यक्षता श्रद्धांजलि सभा : श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्: **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़), **स्वामी आर्येशानन्द जी** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द जी** (गुजरात), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री बावनभाई मेतालिया** (स्थानीय विधायक), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मौरबी), **डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री** (पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी), **श्री एस.के.शर्मा** (मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए), **श्री वाचोनिधी आर्य** (गांधीधाम) **एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिये एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज ''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा, जिला मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें, जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

आप दान राशि सीधे पंजाब नैशनल बैंक में खाता संख्या 4665000100001067 **IFSC-PUNB0466500** में भी जमा करा सकते हैं। कृपया जमा राशि की सूचना दिल्ली कार्यालय को जमा रसीद, अपने पूरे पते सहित अवश्य भेजें ताकि दान की रसीद भिजवानें में सुविधा हो।

—: निवेदक :—

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला मौरबी-363650 (गुजरात) दूरभाष : (02822)287756

मुद्रक व प्रकाशक—रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय